Unit-III, Theory of Distribution-I

1- वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त जे० बी० क्लार्क, वालरस, विक्सटीड द्वारा प्रतिपादित किया गया किन्तु इसे सही रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय श्रमती रविन्सन तथा जे० आर० हिक्स को जाता है।

2- क्लार्क के अनुसार- "स्थिर दशाओं में उद्यमी सहित सभी उत्पत्ति के साधन अपनी सीमान्त उत्पादकता के आधार पर पुरस्कार प्राप्त करेंगें।"

3- (i). APP- औसत भौतिक उत्पादकता $= \frac{TP}{n}$ जहाँ n = साधन विशेष की उत्पादन में लगी इकाइयों संख्या यां, $AP = \frac{TP}{n}$.

(ii)- किसी साधन की एक अतिरिक्त इकाई के प्रयोग से कुल भौतिक उत्पादकता में जो वृद्धि होती है। उसे उस साधन की सीमान्त भौतिक उत्पादकता (MPP) कहते है।

(iii)- $ARP = \frac{TR}{n}$ or $ARP = APP \times AR$

(IV)- $MRP = MPP \times MR$

(V)- $VMP = MPP \times AR$

जहाँ-
ARP = औसत आगम उत्पादक
MRP = सीमान्त " "
APP = औसत भौतिक उत्पादक
MPP = सीमान्त " "
VMP = सीमान्त उत्पादकता क
मूल्य।

4- साधन बाजार में फर्म का अल्पकालीन संतुलन -

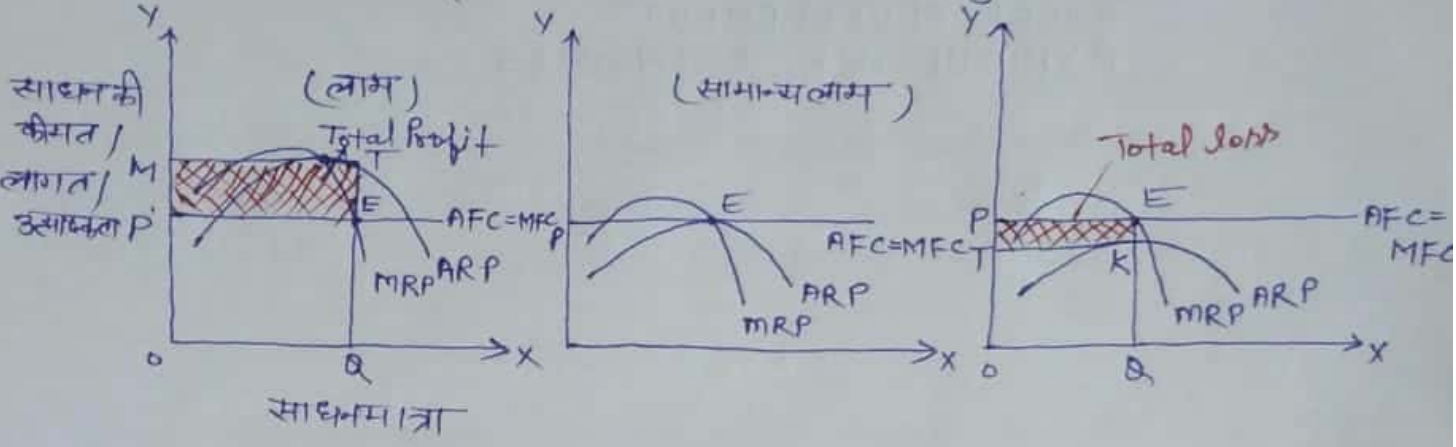

5- दीर्घकाल में साधन बाजार में एक फर्म को केवल सामान्य लाभ मिलता है अर्थात् - साधन कीमत = ARP = MRP = AFC = MFC

6- प्रो० विक्सटीड ने अपनी पुस्तिका "The Co-ordination of the Laws of Distribution" में बताया कि - "यदि प्रत्येक साधन को उसकी सीमान्त उत्पादकता के बराबर पुरस्कार दिया जाता है तो सम्पूर्ण उत्पादन समाप्त हो जायेगा और कुछ भी अतिरेक शेष नहीं बचेगा।" इस समस्या को विक्सटीड ने "उत्पाद समाप्ति की समस्या" बताया।

7- इस समस्या को सिद्ध करने के लिए विक्सटीड ने 'यूलर प्रमेय' का सहारा लिया। यूलर प्रमेय द्वारा यह दिखाया गया है कि यदि उत्पादन फलन कांब डगलस की प्रकृति का है तब प्रत्येक उत्पत्ति के साधन को उसकी सीमान्त उत्पादकता के बराबर भुगतान देने पर, सम्पूर्ण उत्पादन परिसमाप्त हो जायेगा। इसे ही योगशीलता की समस्या भी कहा जाता है।

8- वितरण का आधुनिक सिद्धान्त बताता है कि जैसे किसी वस्तु का मूल्य उस वस्तु की मांग व पूर्ति की सहायता से निश्चित होता है, उसी प्रकार से उत्पत्ति के साधनों की भी कीमत निश्चित होती है।

9- "लगान भूमि की उपज का वह भाग है, जो भू-स्वामी को भूमि की मौलिक तथा अविनाशी शक्तियों के प्रयोग के लिए दिया जाता है।" - रिकार्डो।

10- रिकार्डो के अनुसार भेदात्मक लगान = अधि सीमान्त भूमि की उत्पादकता — सीमान्त भूमि की उत्पादकता ।

11- रिकार्डो के अनुसार - "अनाज की कीमत इसलिए ऊँची नहीं होती क्योंकि लगान दिया जाता है, बल्कि लगान इसलिए दिया जाता है क्योंकि अनाज की कीमत ऊँची होती है।"

12- लगान के आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या करने का श्रेय जे० एम० कीन्स, जेवेन्स, परैटो, मार्शल तथा जॉन राबिन्सन रही है इनके अनुसार - "सापेक्षतः बेलोच पूर्ति वाला प्रत्येक साधन आर्थिक लगान प्राप्त कर सकता है।" आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार —

लगान = वास्तविक आय — हस्तान्तरण आय
= वास्तविक आय — अवसर लागत ।

13- प्रो० वान वीपर ने बताया कि पूर्णतया विशिष्ट साधन वे साधन है जिसका कोई वैकल्पिक प्रयोग नहीं होता इस स्थिति में साधन की सम्पूर्ण आय लगान होती है। क्योंकि हस्तान्तरण आय शून्य होगी।

14- पूर्ण अविशिष्ट साधन - वे साधन हैं जिनके अनेक वैकल्पिक प्रयोग होते है इस स्थिति में साधन की वास्तविक आय और हस्तान्तरण आय समान होगी और कोई लगान प्राप्त नहीं होगा।

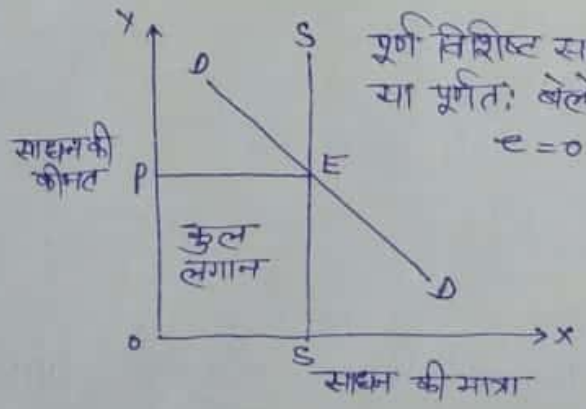

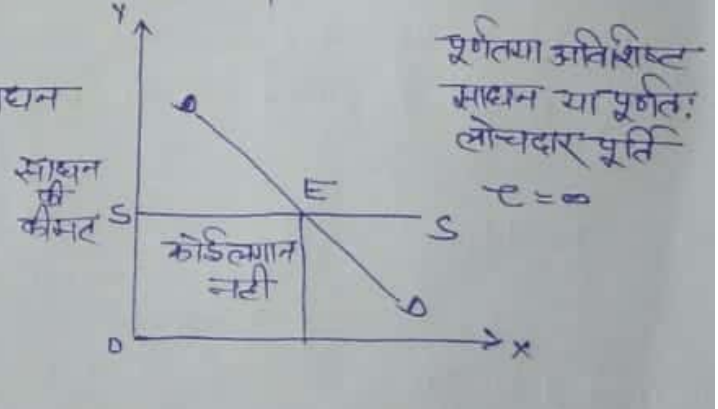

15- आधुनिक अर्थशास्त्रियों का कहना है कि - कोई भी साधन न तो पूर्ण विशिष्ट है और न ही पूर्ण अविशिष्ट। बल्कि उनमें विशिष्टता एवं अविशिष्टता दोनों प्रकार के गुण विद्यमान होते है।

16- इनके अनुसार - "लगान विशिष्टता का पुरस्कार है।"

17 - आभास लगान का विचार मार्शल ने प्रस्तुत किया।

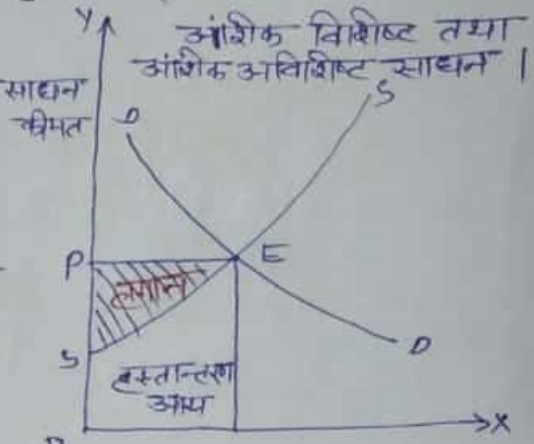

18 - वह आधिक्य जो अल्पकाल में भूमि को छोड़कर मानव निर्मित साधन प्राप्त करते है, आभास लगान कहलाता है। यह एक अल्पकालीन अस्थाई आधिक्य है जो दीर्घकाल में समाप्त हो जाता है।

19- आभास लगान = TR - TVC. - प्रो० क्लास एन.ए.

20- औसत आभास लगान = AR - AVC.

21- आभास लगान शून्य हो सकता है किन्तु कभी ऋणात्मक नहीं होता।

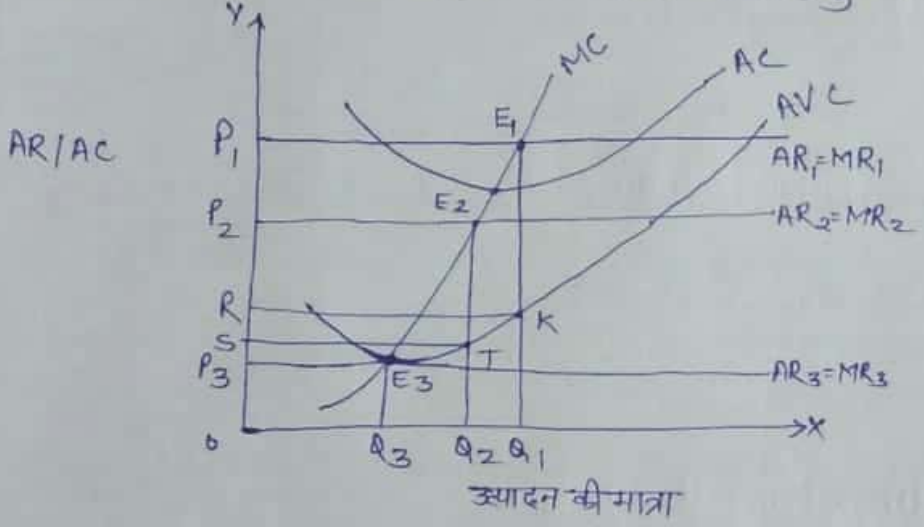

कीमत OP_1 होने पर लगान = AR - AVC

$E_1Q_1 - KQ_1 = E_1K$

कुल = P_1E_1KR.

22- श्रम के उपयोग के लिए चुकाई गई कीमत को मजदूरी या मजदूरी दर कहते है।

23. "काम की सेवा के लिए दिया गया मूल्य मजदूरी है" - मार्शल

24- "काम का वेतन ही मजदूरी है।" - सेलिगमैन

25- वास्तविक मजदूरी = $\frac{Wm}{P}$ जहाँ Wm - श्रमिकों की नकद मजदूरी तथा P - सामान्य कीमत स्तर है।

26 - मजदूरी का निर्धारण श्रम की मांग एवं श्रम की पूर्ति के परस्पर बराबर होने पर निर्धारित होती है। - मजदूरी का आधुनिक सिद्धान्त।

27- 'जीवन-निर्वाह मजदूरी-सिद्धान्त'- 18वीं शताब्दी में फ्रांस के प्रकृतिवादी अर्थशास्त्री तरगो (Turgot) ने रचना की। बाद में रिकार्डो ने पुष्टि की। जर्मनी के अर्थशास्त्री लैसली (Lassale) ने भी मान्यता दी तथा इसे 'मजदूरी का लौह नियम (Iron law of Wages) या 'ब्रजैन नियम' (Brazen law of Wages) के नाम से पुकारा था। इसे 'मजदूरी का प्राकृतिक नियम' भी कहा जाता है।

28- 'मजदूरी का जीवन-स्तर सिद्धान्त'- इसमें अर्थशास्त्रियों ने 'जीवन-निर्वाह' शब्द को त्यागकर 'जीवनस्तर' शब्द का प्रयोग किया है।

29- 'मजदूरी का अवशेष अधिकारी सिद्धान्त' (Residual Claimant Theory of Wages) - वॉकर (Walker) -
मजदूरी = (कुल उत्पादन) - लगान + ब्याज + लाभ)

30- 'मजदूरी-कोष सिद्धान्त'- प्रतिपादक - एडम स्मिथ।

31- 'मजदूरी का सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त'- जे० बी० क्लार्क, जेवन्स, प्रो० वॉन थ्यूनन।

32- 'मजदूरी का बहुयुक्त सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त'- प्रो० हॉब्सिन।

33- "मुद्रा की सेवाओं के लिए या मौद्रिक पूँजी के उपयोग के लिए दिया गया भुगतान ब्याज कहलाता है। अर्थात् ब्याज एक निश्चित अवधि के लिए द्रव्यता के परित्याग का पुरस्कार है।"

34- सामाजिक एवम् आर्थिक विकास के साथ-साथ ब्याज की दर कम अवश्य होती है पर कभी शून्य नहीं हो सकती।

35- (i) 'ब्याज की सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त'— माल्थस, कैरे, जे० बी० से तथा वान थ्यूनन
(ii) 'ब्याज का उपभोग स्थगन या त्याग का सिद्धान्त'— प्रो० सीनियर
(iii) 'ब्याज का प्रतीक्षा का सिद्धान्त'— ~~सीनियर~~ प्रो० मार्शल
(iv) 'ब्याज का समय अधिमान सिद्धान्त'— प्रो० फिशर, बाम-बावर्क।
(v) 'ब्याज का परम्परावादी सिद्धान्त'— प्रो० मार्शल, वालरस, नाइट, पीगू।
"ब्याजदर पूँजी की माँग तथा पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों द्वारा तय होती है।

(VI)- 'ऋण योग्य कोष सिद्धान्त या नवप्रतिष्ठित सिद्धान्त'- प्रो० विक्सेल, ओहलिन तथा मिर्डल।

(a) ऋण योग्य कोष की माँग = निवेश + उपभोग + संचय
अर्थात् $DL = I + C + H$

(b)- ऋणयोग्य कोष की पूर्ति = बचत + बैंक साख + अपसंचय + अनिवेश
अर्थात् $SL = S + M + DH + DI$

जहाँ $SL = DL$ होगा वही ब्याजदर निर्धारित होगा।

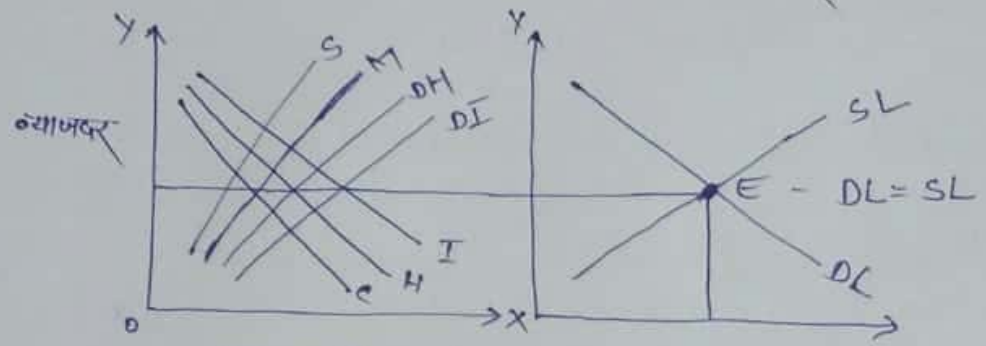

(ऋण योग्य कोष की मात्रा)

36- ब्याज का तरलता पसन्दगी सिद्धान्त - प्रो० जे० एम० कीन्स ने 1936 में अपनी पुस्तक "General Theory of Employment, Interest and Money" में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार —

"किसी निश्चित अवधि के लिए तरलता के त्याग का पुरस्कार ही ब्याज है।"

(i) कीन्स के अनुसार मुद्रा की माँग 3 उद्देश्यों से की जाती है -

a- सौदा उद्देश्य (Transaction Motive)
b- दूरदर्शिता उद्देश्य (Precautionary Motive)
} a, b उद्देश्य हेतु मुद्रा की माँग मुख्यतः आय स्तर पर निर्भर करती है अर्थात् $L_1 = f(Y)$

c- सट्टा उद्देश्य (Speculative Motive) - व्यक्ति अपने पास नकद मुद्रा इसलिए भी रखना चाहता है ताकि भविष्य में ब्याजदर, बाण्ड तथा प्रतिभूतियों की कीमतों में होने वाले परिवर्तन का लाभ उठा सके। इस का सम्बंध मुख्यतः ब्याज की दर से होता है अर्थात् - $L_2 = f(r)$.

सट्टा उद्देश्य के लिए रखी गई मुद्रा को निष्क्रिय मुद्रा (Idle Money) भी कहा जाता है।

(ii) कुल मुद्रा की माँग अर्थात् तरलता पसन्दगी =

$$(L) - = L_1 + L_2$$
$$L = f(Y) + f(r)$$
$$L = f(Y, r)$$

37- तरलता जाल - "बहुत कम ब्याज दर सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की माँग पूर्णतया लोचदार हो जाती है अर्थात् व्यक्ति अपनी समस्त मुद्रा को अपने पास नकद रूप में रखने के इच्छुक होते है। LP वक्र के पूर्ण लोचदार भाग को ही कीन्स ने तरलता जाल या पूर्ण नकदी अधिमान अवस्था कहा है।

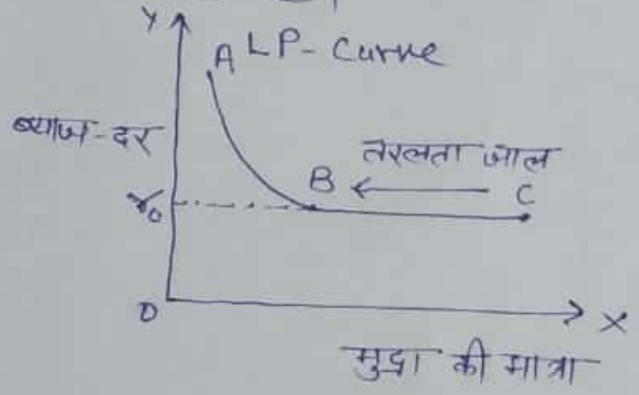

38- ब्याज के आधुनिक सिद्धान्त को हिक्स-हेन्सन समन्वय सिद्धान्त भी कहा जाता है। इन्होंने IS वक्र तथा LM वक्र के द्वारा ब्याज दर को निर्धारित किया है।

39- राष्ट्रीय आय का वह भाग जो उद्यमी को प्राप्त होता है लाभ कहलाता है। या "उद्यमी के कार्य का पुरस्कार ही लाभ है।"

लाभ = कुल आय - कुल लागत

40 - (i) लाभ का मजदूरी सिद्धान्त – प्रो० टांजिंग, डैवनपोर्ट
(ii) लाभ का लगान सिद्धान्त – प्रो० सीनियर तथा मिल
(iii) लाभ का प्रावैगिक सिद्धान्त – प्रो० जे.बी० क्लार्क
(iv) लाभ का नवप्रवर्तन का सिद्धान्त – प्रो० शुम्पीटर
(v) लाभ का सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त
(vi) - लाभ का जोखिम सिद्धान्त – प्रो० हाले
(vii) - लाभ का अनिश्चितता का सिद्धान्त – प्रो० नाइट ने अपनी पुस्तक 'Risk, Uncertainty and Profit' में जोखिम को अनिश्चितता के आधार पर दो भागों में बाँटा है-
(a) ज्ञात जोखिम या बीमा योग्य जोखिम
(b) अज्ञात जोखिम या बीमा अयोग्य जोखिम-
"अज्ञात जोखिम को झेलने का पुरस्कार ही लाभ है।"
(viii) - लाभ का समाजवादी सिद्धान्त - प्रो० कार्लमार्क्स
(ix) - लाभ का सम्भाव्य अचम्भा का सिद्धान्त - प्रो० शैकिल - इनके सिद्धान्त में सर्वोत्तम आकर्षण वाली परिकल्पना को फोकस परिकल्पना कहा जाता है।

B.A. SEM-II

Micro Economics-II

Unit-III - Theory of Distribution-I

Unit-IV - Theory of Distribution-II

*- Dr. Manas Mani Tiwari,
Economics Department,
Shri Jai Narain M.P.G. college,
Lucknow.